★ श्री सीतारामाभ्यान्नमः ★

गङ्गा-गुण-गान

मैथिली-भाषा

लेखक

श्री अभिरामदास जी

प्रथम संस्करण

सन् १९५९ ई०

सर्वाधिकार सुरक्षित ।

जयभारत प्रेस, वाराणसी ।

श्री गङ्गा देव्यै नमः ।

गङ्गा-गुण-गान

(मैथिली-भाषा)

●

लेखक—

श्री अभिरामदास जी ।

●

प्रकाशक—

महन्थ श्री १०८ श्री माखनदासजी महाराज

मु० श्री रामजानकी मन्दिर

अनटौर पो० वहेड़ा

जि० दरभंगा (विहार)

निछावर पाँच आना

समर्पण

दया-निधे ! रघुनाथ ! रामजी !
दीनबन्धु ! जन-पाल ! कृपाल !
अशरण-शरण ! अनाथ-नाथ-प्रभु !
हे सुर-नायक ! दीन-दयाल !।
आबि अहाँक समीप कृपा-निधि !
हे सुख-दायक ! जन-गण-जान !
कर इत छी अभिराम समर्पण-
ई पुस्तक 'गंगा - गुण - गान' ।।

सम्मतिः--

व्याकरणाचार्य वेदान्तशास्त्री वैष्णव-प्रवर श्री अभिरामदासजी द्वारा निर्मित 'श्री गंगा गुणगान' नामक गंगा-स्तुति पुस्तक मैथिली-पद्य में अत्यन्त सुललित छन्द ओ सरल भाषा में देखि अत्यन्त हर्षभेल, उक्त महात्मा जी संस्कृत तथा भाषाक योग्य कवि छथि हिनक एक कृति 'प्रियतम प्रार्थना' नामक श्री जानकी रामक स्तुति पूर्व प्रकाशित भैचुकल छनि जकरा हम आद्योपान्त पढ़ि चुकल छी तथा समाज में ओकर प्रचार सँ विशेष लाभो भेल छैक आशा अछि, एहि 'गङ्गा गुणगान' पद्यावली सँ समाजक विशेष कै मैथिली भाषाक परम उपकार हेतै।

सीताराम झा

काशी।

१९-१०-५९ ई०

जय श्री रामानन्द !

नम्रनिवेदन

प्रिय पाठक-गण !

आइ जगत् जननी-जनक श्री सीतारामजी क असीम अनुकम्पा सँ 'गंगा-गुण-गान' नामक एक छोटछीन पुस्तक लिखि अपने लोकनिक सेवा में समर्पण कय रहल छी। एहि लघु-काय-पुस्तक में पतितपावनी श्रीगंगाजी क मैथिली भाषामय स्तुति, प्रार्थना और विनयादि भेटत।

एहि पुस्तक के देखि अथवा पढ़िकऽ अपने सब ई कहि सकैत छी जे श्री गंगाजीक स्तुति वा प्रार्थना तऽ संस्कृत भाषा में छैके तहन ई मैथिली भाषा में कियैक बनाओल ? तकर उत्तर ई भय सकैत अछि जे--

'भावमिच्छन्ति देवताः'

अर्थात् भगवान और भगवतीक दरबार में केवल प्रेमें प्रधान छैक। लिखलो अछि यथा--

मूर्खो वदति विष्णाय धीरो वदति विष्णवे।
उभयोस्तुफलं तुल्यं भावग्राही जनार्दनः ॥

दोसर बात ई जे प्रत्येक मानव के अपन भाषा अत्यन्त प्रिय होइत छैक। ओ अपना भाषा में अपन भाव व्यक्त करब अपन भाषाक सेवा समझैत अछि। एतदर्थ हमहु छोटछीन प्रयास कयलहुँ अछि।

गंगा खास भगवत् स्वरूपा थिकी। भगवाने पतित-मानवोपकारार्थ गंगाक रूप धारण कयने छथि। प्रमाण में साक्षात् वेदस्वरूप श्रीमद्भगवद्गीता अछि।

जाहि में की भगवान् स्वयं अपना मुखारविन्द सँ कहने छथि जे—

'स्रोतसा मस्मिजाह्नवी' (अ० १० श्लोक ३१) औरो अनेक सूक्ति भिलैत अछि। यथा—

गंगा गीता च गायत्री गोविन्देति हृदिस्थिते।
चतुर्गकार संयुक्ते--पुनर्जन्म न विद्यते ॥

अधिक की लिखू। सम्प्रति श्रीमद्भागवत महा-पुराणस्थ श्रीगंगाजो क महिमा स्मरण भय रहल अछि। जाहि में थोड़ बहि शब्द में बहुत किछु कहल अछि। यथा–जिनक जल-स्पर्शमात्रे सँ कपिल-मुनि क शाप सँ मूलि सगर-सन्तान केवल देहक छौर से स्वर्ग प्राप्त कयलन्हि तहन जे की श्रद्धा क साथ धृतव्रतभय हुनक सेवन करैत छथि तिनकतऽ कथे कोन। ओ तऽ सद्यः परम पद-क प्राप्त करताह। यथाः—

'यज्जल स्पर्श मात्रेण-
ब्रह्म-दण्ड-हता अपि ।
सगरात्मजा दिवं जग्मुः
केवलं देह-भस्मभिः ॥
भस्मी भूताङ्ग सङ्गेन-
स्वर्याताः सगरात्मजाः।
किं पुनः श्रद्धया देवीं-
ये सेवन्ते धृत-व्रताः ॥'
(भा० स्क० ९ अ० ९ श्लो० १२-१३)

हम केवल अपन वाणी पवित्र करक हेतु ई 'गंगा-गुण-गान' लिखल हुँ अछि। जाहि में अपने सबके कोनों रस या अलंकार नहि भेटत; किन्तु एक व्यक्ति क भाव अवश्य भेटत। एतदर्थ यदि पाठक-गण एहि पुस्तक-पाठ सँ किछुओ सुख-शान्ति पौताह तऽ हम अपना के सर्वथा कृतकार्य समझब।

॥ जय गङ्गे ॥

अभिराम दास

आदर्श श्रीरामानन्द महाविद्यालय

शङ्कुधारा, काशी।

श्रीमते रामानन्दाय नमः

गुरुं नौमि कृपा-सिन्धुं शिष्य-सन्ताप-हारकम् ।
राम-भक्ति-प्रदातारं पूज्यं 'श्रीरामसुन्दरम्' ॥

गंगा-गुण-गान

गंगा-स्तुति

(द्रुतविलम्बित)

(१)

सकल पाप-विनाशिनि ! पावनि !
सतत छी अपने सुखदायिनी ।
जल अहाँक पवित्र महेश्वरि !
अछि कहै छथि पण्डित-वृन्द ऐ ॥

(२)

यदि अहाँ अबितौं नहि लोक में
सब दुखी रहितैथ नदीश्वरि ! ॥
जन-मनो मल-हारिणि ! हे शिवे !
करु दया हमरो पर में सदा ॥

(३)

नरक-हारिणि ! छी अपने सदा—
जन-समूह-विपत्ति-विनाशिनी ॥
भुवनमें अपनेक समान ऐ—
नहि कियो छथि पावन-कारिणी ॥

(४)

त्रिपथगे ! अपनेक सु-नीर में
जन नहाइत जे छथि आविकऽ ।
हुनक पाप-कलाप प्रलाप कै—
निकलि जाइत छैन्ह सु-देहसँ ॥

(५)

सुरसरी अपने कहवैत छी—
जगत में जगदीश्वरि ! जाह्नवि ! ॥
जल क पान करै छथि जे सदा—
परम स्वस्थ रहैछथि ओ शुभे ! ॥

(६)

अयि ! भगीरथ-नन्दिनि ! पूजिते !
मकर-वाहिनि ! देवि ! दया करू ।
अछि सु-शोभित तीर अहाँक ऐ—
त्रिभुवनेश्वरि ! साधु-समूह सँ ॥

(७)

जिनक प्राण छुटै छनि आबिकऽ—
सु-तट में अपनेक जन-प्रिये ! ।
तुरत जाइत छैथ पवित्र भै—
अयि दयावति ! ओ हरि-लोक में ॥

(८)

भय प्रसन्न करू अपने दया—
सुनु अहाँ अभिरामक प्रार्थना ॥
दिय सुरेश्वरि ! राम क भक्ति ऐ—
सकल दुःख-हरे ! हमरा सदा ॥

॥ जय गंगे ॥

गङ्गा-स्तोत्र

(वसंततिलका)

(१)

गंगा ! अहाँक सुनि नाम समीप एलौं,
राखू कृपा त्रिपथगे ! निज दास जानि ।
जे लैत छैथ जग में अपनेक नाम,
होईत छैथ सुनु ओ जन पूर्ण काम ॥

(२)

हे पुण्य-दे ! मकर-वाहिनि ! जे अहाँक,
संज्ञाक कीर्तन करै छथि व्यक्ति नित्य ।
भागीरथि ! त्रिभुवनेश्वरि ! जह्नु-कन्ये !—
पावैत छैथ मन वाँछित-वस्तु काँ ओ !।

(३)

गंगा, भगीरथ-सुता, सुर-निम्नगा ओ—
पुण्या, क्षमा, शतमुखी, धवला सुतीरा ।
इत्यादि नाम अपनेक सदा मनस्वी
गावैत छैथ जग में मनसँ सु-शीले ! ।।

(४)

पुण्ये ! अहाँक जल-पान-समान कोनों—
नै छैक पान जगमें सुनु सत्य जानि ।
एलौं अहाँक लगमें हम यैह मानि--
छोड़ू न देवि ! हमरा अपने सुधीरे ! ।।

(५)

आशा न ऐछ हमरा बहु पुण्यताक--
आशा न ऐछ हमरा बहु पण्डिताक ।
आशा न ऐछ हमरा अति रूपताक--
अस्तित्व ऐछ यदि देवि ! अहाँक भूमें ।।

(६)

हे शम्भु-मस्तक-विहारिणि ! पुण्य-तीरे !—
गङ्गे ! क्षमे ! मकर-वाहिनि ! देव-पूज्ये ॥
माऽछैतछी वर नदीश्वरि ! हाथ जोड़ि—
श्री रामचन्द्र-प्रभु में दिय भक्ति शीघ्र ॥

(७)

गावी सदा हम अहाँक सु-तीर में आ—
श्री रामचन्द्र प्रभु काँ सुख-दा सु-लीला ।
देखी सदा हम अहाँक मनोऽनुकूला—
धारा समस्त-सुख-दा विमला उदारा ॥

(८)

आवैत छैथ अपनेक समक्ष में जे—
ओ व्यक्ति पावन बनै छथि शीघ्र गङ्गे ! ।
मातर्मनोमल - विनाशिनि ! साधु-सेव्ये !
श्री जानकी-रमण में दिय भक्ति देवि ! ॥

(९)

हे सर्वलोक-सुख-कारिणि ! भूमि-हारे !—
भागीरथि ! प्रिय-तरे ! जन-रोग-हन्त्रि ! ।

हे मैथिली-प्रिय-तमे ! मिथिलाक सीमे !—
देखू कृपा कय सुरेश्वरि ! सिन्धु-जाये ! ।६

(१०)

जाईत छी बहुत दूर अहाँ सु-पूण्ये !
भेटैथ राम यदि तऽ कहबैन्ह रोकि—
'कानैत ऐछ अभिराम अहाँक हेतु—
जाके दियौ अपन दर्शन शीघ्र राम !' ।१०

।! जय गङ्गे ! ॥

गङ्गास्तव

(मन्दाक्रान्ता)

(१)

गंगा देवी सकल सुखदा विश्व में छैथ जानू—
भारी तृष्णा हिनक जलसँ दूर होईत छै औ !
जे-जे गंगा श्रवण-सुखदा ई सु-संज्ञा ज-पैये—
ओ-ओ प्राणी विमल मन हो राम-सामीप्य जेता ॥

(२)

गंगा-गंगा मुदित मनसँ जे बजै छैथ भूमें—
ओ निष्पापी भय भुवन में अन्त में स्वर्ग पौता ।

गंगा एली सभक सुखकाँ हेतु भूमें सुशीला—
ई कल्याणी भुवन-जननी पूजनीया पवित्रा।

(३)

श्री गंगा के विपुल सुख-दा तीर में आबि ज्ञानी—
पूजा पाठ स्तवन मनसँ जे करै छैथ प्राणी।
ओ मानी भै परम गतिकाँ प्राप्त होईछ मानू—
गंगा माता सकल सुख-दा छैथ ई सत्य जानू॥

(४)

जे गंगा में मनुज स्थिर भै रामकाँ नाम लेता—
ओ पुण्यात्मा जगत भरि में देवता-पूज्य हेता।
चिन्ता सँ ओ रहित हयता वस्तु ओ नीक पौता—
भारी दानी भय भुवन में राम के धाम जेता॥

(५)

गंगा माता सदृश कलि में और नै छैथ कोनो—
देवा देवी बिपुल-सुख-दा बात ई सत्य जानू।
जे प्राणी आ हिनक जलमें प्रेम सँ स्नानकर्ता—
हेता मानी सुजन-गण-में ओ महान् पूज्य-वक्ता॥

(६)

गंगा, पुण्या, सुरसरि, शुभा, शान्तिदा, भूमिहारा—
शान्ता, शुक्ला, सुरधुनि, क्षमा, वैष्णवी, सिन्धु-कांता।

गीता जे जे अमल मनमैं शान्ति पीताह अो ओ—
हेता योगी अमर-पदकाँ शीघ्र ओ पावि जेता ॥

(७)

गावू गीता-सदृश सुखदा नित्य गंगाक संज्ञा।
गंगा हेती तुरत शुभदा पूजनीयाँ प्रसन्ना।
कोनों भारी अशुभ रहता नै अहाँ के समीप—
वाँच्छा पूरा सकल करती शीघ्र भागीरथी ई ॥

(८)

हे गंगे ! माँ ! हमहु अयलौं देवि ! अाहाँक पास,
भारी दानी छथि भुवन में सूनि भागीरथी ऐ।
इच्छा पूरा हमरहु करू भक्ति दै रामजीक—
चाही नै हे सुर-गण-नुते ! और किञ्चित् पवित्रे !

॥ जय गङ्गे ॥

गङ्गानुति

(मालिनी)

(१)

अयि सुरधुनि ! गंगे ! जाह्नवि ! प्राणदात्रि !
सकल मनुज-मान्ये ! देवि ! रोगार्त्ति-हन्त्रि ॥

हम अयल हुँ लग में बन्दनीये ! अहाँक—
करु अपन कृपा ऐ पूजनीया पवित्रा ॥

(२)

सुनलहुँ अछि संज्ञा वैष्णवी ! सिन्धु-जाया ! ।
विवुध - गण - सुपूज्या छी कहावैत भू में ।
ऋषि-मुनि-गण सेव्ये ! वासकै तीर में ऐ—
करइत छथि पूजा, शान्ति-दात्री अहाँक ॥

(३)

गहलक जग में जे माय ! आहाँक पैर,
सकल भुवन-मानी भेल ओ सत्य जानू ।
अधिक हम कहू की ईश्वरी ! आब गंगे !
लिय खबरि अहाँ ऐ विश्वमाता ! कृपालो ! ॥

(४)

भगवति ! छथि प्राणी जे सुरापी जगत् में ।
कखनहुँ जकरा सँ नै बजै छैक कीयो ।
यदि कयलक माता ! एहनो व्यक्ति आबि ।
सकल-सुखद-धारा-स्नान आहाँक आबि ॥

(५)

बनइत अछि गंगे ! ओ महान् पुण्यकर्त्ता ।
अपनहिक - दयासँ हे पुनीते ! सुशीले ! ।

सब मनुज करै छन्हि सर्वदा पुण्य - चर्चा ।
हुनक भुवन में ऐ प्रेमसँ मोर साँझ ॥

(५)

सुरधुनि ! मुनि-वन्द्ये ! जह्नु-कन्ये ! पवित्रे !
अयलहुँ हम मातः ! आइ सामीप्य में ऐ ।
हमरहु दिशि ताकू, भीष्ममाता ! सुधीरे !
हम हयब अहीं के दृष्टिसँ लब्ध - काम ॥

(७)

अयि भगवति ! गंगे ! पुण्य धारे ! पवित्रे !—
सुनु हमरहु वार्ता कान दै शीघ्र पूज्ये !
यदि मिलथि अहाँके रामजी जानकीश—
कहबनि हुनकासँ देथि ओ आवि दृष्टि ॥

(८)

हम बहुतन जानै छी कहू की अहाँसँ ।
जन-हृदयक वार्त्ता देवि ! आहाँ जनैछी ।
वर मङइत छी ई सीर्फ गंगे ! अहाँ सँ ।
दशरथ - सुत-सीताराम में भक्ति दीयऽ ॥

॥ जय गङ्गे ॥

गंगा-प्रार्थना

(शिखरणी)

(१)

अये गंगे ! मातः ! मनुज-सुख-दात्री ! सुरनुता !–
अहाँ सँ हे मातः ! अछि हमर ई यैह विनती ।
सदा राखी आहाँ जननि ! अपना पास सुख-दे !
रही शान्ते ! पुण्ये । हमहुँ अपने के शरण में ॥

(२)

अहाँ एलौं देवी ! सब सुख-प्रदानार्थ जग में ।
मही भेली पुण्या सुखद-जल-संस्पर्श कयके ।
महायोगी ज्ञानी कहइत रहै छैथ मन सँ ।
सदा गंगा गंगा श्रवण सुखदा पूज्य-तट में ।

(३)

सुरापी ओ पापी छल जगत में जे सुगति-दे !,
अहाँके पीयूषोपम-सुपय-पी पूत बनला ॥
महामान्ये ! पूज्ये ! करु अपन भागीरथि ! दया !
जगत् में नै छै ऐ पतित-सुखदात्री जनि कियो ॥

(४)

कृपा गारे ! माये ! भगवति ! शुभे ! हे त्रिपथ-गे !।
दया राखू गंगे ! बिसरि जनि जाऊ सुनयने ! ।
सदा भूमे मानी बुध छथि कहावैत सबसँ ।
अहाँ के जे प्राणी बसइत रहै छैथ तट में ॥

(५)

अये शान्ते ! पुण्ये ! विमल-वसने ! जह्नु-तनये !
थिकौं आहाँ भूमे विपुल सुख-दा देवि ! विमले ! ।
अहाँ के ई धारा नयन-सुख-दा ऐछ जग में,
जहाँ आके योगी बसइत रहै छैथ मनसँ ॥

(६)

महा पापी आके करइत जल-स्पर्श छथि जे,
बनै औ ऐ भूमे छथि सकल-मानी सुर-नुते ! ।
अहाँ छी ए पूज्या अखिल मुनिसँ विष्णु-रमणि !
अहाँ के विख्याता अछि निखिल जगमें कीर्ति सुखदा

(७)

महालीले ! गङ्गे ! त्रिभुवन-प्रिये ! विश्व-सुख-दे !,
अये पृथ्वी-हारे ! हम वर मङै छी दिय अहाँ ॥

न चाही हे मातः ! धन जन मही कीर्ति हमरा,
परन्तु श्री सीता-रमण-प्रभु में प्रेम-धन हो ॥

(८)

अहाँ के गावी ऐ रहि सुतट में राम-प्रभु के—
सुलीला प्रख्याता मुनि गणक परमाराध्य सुखदा ॥
दियौ गंगा देवी ! झटिति हमरा वर अहाँ,
क्षमे ! धीरे ! ध्येये ! सुर-तटिनि ! भागीरथि ! शुभे ! ॥

॥ जय गङ्गे ॥

गङ्गाष्टक

(शार्दूल)

(१)

हे भागीरथि ! सर्वलोक-सुख-दे ! गंगे ! दया-कारिणि !
एलौं आइ अहाँक पास झट दै देखू कृपा-दृष्टि सँ ॥
भूमें ऐछ अहाँक कीर्त्ति विमला ! प्रख्यात विश्वेश्वरि !
राखू ध्यान अहाँ सदा त्रिपथगे हे देव-पूज्ये ! शिवे ! ॥

(२)

जे सुस्नान करैत छैथ जल में, आहाँक सर्वप्रिये !
ओ होईत सुरेश तुल्य छथि ऐ शान्ते ! सुतीरेऽनघे ! ॥

प्राणी मात्र अहाँक पुण्य-जल पी, भेला सुखी विश्वमें ।
गंगे ! देवि ! करू कृपा अपन ऐ, हे जह्नु-कन्ये ! शुभे ! ॥

(३)

पावै नै छथि योग-ध्यान कयने
जे लोक योगी गुणी ,
पावै नै छथि तीर्थ दान कयने
जे वस्तु यात्री धनी ।
हे गङ्गे ! अपनेक किन्तु जल के
पानादि सँ पावि कऽ ,
लब्धाभीष्ट बनैत छैथ सब ऐ
भागीरथी ! पावनी ! ॥

(४)

ब्रह्मा ध्यान लगाय सूतथु सदा—
हे देवि ! निःशंक भै ,
वैकुण्ठाधिप-विष्णुओ सुमन सँ—
जाके सदा सूतथु ।
शूली शंकर आशुतोष छथि जे—
ओहो शिवे ! नाचथु ,

गङ्गे ! छी यदि वर्तमान अपने–
संसार में निर्मला ॥

(५)

प्राणी छैथ महान ओ जगत में–
हे पूज्य - देवापगे !
गङ्गे ! संतत जे रहैत छथि ए–
आहाँक सामीप्य में ।
ब्रह्मा आदि समस्त देव-गण सँ–
ओ पूज्य भै लोक में,
मुक्ति प्राप्त करैत छैथ विमले !–
आनन्द-दा दुर्लभा ॥

(६)

आहाँ आयल छी भगीरथ-सुते !–
ए जाह्नवी ! शान्ति-दे ! ।
पापी लोक-हितार्थ एहि जग में–
धर्मद्रवी ! वैष्णवी ! ।
पुण्ये ! पापविनाशिनी ! सुरसरी !–
हे कान्ति-दे ! शोभने !

एको बेर अहाँ कृपा-नयन सँ—
देखू जगत्तारिणी ! ॥

(७)

पारावार-विहारिणी ! भगवती !—
गङ्गे ! दया-सागरे ! ।
भूलू नै अपने कदापि हमरा—
विश्वेश्वरी ! जाह्नवी ! ।
कोनों देव अहाँ समान जग में—
नैं छैथ उद्धारकऽ ।
हे मृत्युञ्जय-माथ चार-कुशले !—
ई बात जानू अहाँ ॥

(८)

गङ्गे ! देवि ! दयावती ! सुगति-दे !—
सुनू अहाँ प्रार्थना ।
माङै छी अभिरामदास हम ए—
भिक्षा अहाँ सँ शुभा ।
सीताराम पदाब्ज-भक्ति सुखदा—
आके सुनीरे ! दियऽ ,

हेवै पूर्ण सुखी प्रसन्न हम ए—
सन्ताप - संहारिणी ! ॥

॥ जय गङ्गे ॥

गङ्गाविनय

(इन्द्रवज्रा)

(१)

गङ्गे कृपा-कारिणि ! देव-पूज्ये !,
धर्मद्रवी छी कहवैत आहाँ ।
ई सुनि पापी हम आइ एलौं-
धर्मार्थ आहाँक समीप देवि ! ॥

(२)

संसार में लोक वजैत छै ए-
भागीरथी छैथ सु-पाप-हर्त्री ।
ई जानि जीं में उत्साह भेल-
सामीप्य एलौं अविलम्ब दौड़ि ॥

(३)

योगी गुणी वृन्द सदा अहाँक-
पजा करै छैथ सुतीर में आ ।

हे जाह्नवी ! पाप-विनाशयित्री !
गङ्गा ! कृपा कै हमरा निहारू ।।
(४)
जे जे अहाँ के जल में सुशीले !
प्राणी करै छैथ सनान अवि ।
ओ ओ बनै छैथ महान् तपस्वी-
माता अहाँ के सुभदा कृपासँ ।।
(५)
जे भक्त आहाँक सु-मृत्तिका लै-
ललाट में छैथ सदा लगावै ।
निष्पाप ओ होइत छैथ भूमे-
हे जह्नु-कन्ये ! सुखदान-दत्ते ! ।।
(६)
धारा अहाँ के सुखदा मनोज्ञा-
संसार में आ सुखके करै यै ।
जे आवि के देखथि छैथ व्यक्ति-
ओ हो बनै छैथ सुपुण्यवान् ।।
(७)
गंगा क्षमा शान्ति-प्रदा सुपुण्या-
भागीरथी आदि अहाँ क नाम ।

सुप्रेमसँ जे छथि लैत व्यक्ति-
जाईत ओ छैथ रमेश-धाम ॥

(८)

याच्ञा अहाँ सँ अछि यैह मातः !
शान्ति प्रदे ! सर्व सुख-प्रदात्रि ! ।
गावी अहाँ के रहि तीर में ऐ—
गंगे ! सदा सुन्दर राम नाम ॥

॥ जय गङ्गे ॥

गंगा-विनती

(वंशस्थ)

(१)

समस्त संताप विनाशनी शुभा—
कृपासमुद्रा भव-दुःख-हारिणी ।
अहाँक गङ्गे ! अयलौं समीपमें-
करू कृपा-दीन जनार्ति-हारिणि ! ॥

(२)

अहाँ विना नै जगमें दयावति !
कियो कहूँ छैक सुख - प्रदायिनी ।

अतः अहाँ सँ अछि प्रार्थना शुभे
महेश्वरी ! रामक भक्ति के दियऽ ॥
(३)
जनार्त्ति-विध्वंशन - कार्य-कारिणी–
अहीं सदा छी जग में नदीश्वरि ! ।
कृपा न भूलू कहियो कृपामयि !
अहाँक भागीरथि ! छी समीप में ।
(४)
महामहा किल्विषवान् मनुष्यजे–
करैत सुस्नान क्षमे ! सदाछथि ।
अहाँक पापं - हर - नीर में सदा–
बनैत ओ छैथ सुपूज्य विश्व में ॥
(५)
मुनीश–संसेवित–तीर–शोभिते !
गुणाकरे ! जाह्नवि ! देव-निम्नगे ! ।
अहाँ न भूलू हमरा जन-प्रिये !
शिवे ! दया-कारिणि ! भक्त-वत्सले ! ॥
(६)
भगीरथ-प्राण-विवर्द्धिनी क्षमा—
त्रिमार्ग-गा विष्णुपदी, सुपूजिता ।

नदीश्वरी, भोगवती, सुपुण्य-दा–
कृपा करू हे हरिलोक-दायिनी ! ॥

(७)

यतीन्द्र-सम्पूजित-विष्णु-वल्लभे !–
अनन्त पापक्षय-कारिणी शिवे ! ।
सुख-प्रदे ! पाप-हरे ! करू दया—
अहाँ स्वकीया बहु साधु-पूजिते ॥

(८)

हरि-प्रिये ! जह्नु-सुते ! मनोहरे !–
अये दया-कारिणि ! विश्व-वन्दिते ! ।
मङैत छी ऐ अभिराम-अर्चिते !–
अहाँ दियौ राम क भक्ति सर्वदा ॥

॥ जय गंगे ॥

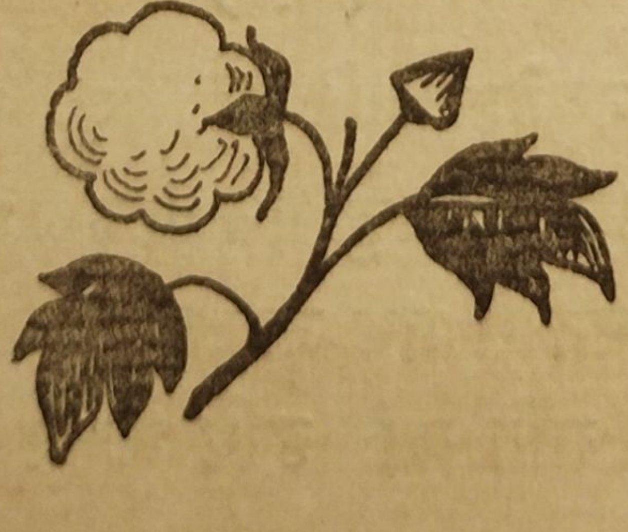

सर्वाराध्या श्री सीताजी

(अश्वघाटी)

ध्याता थिकी सब सँ सीता सदा-
जग दतीता समान छथि ओ,,
गीता जकाँ सतत सीताक नाम रटु-
भीता न हैब कहि यो ।
चिन्ता अहाँक सुनि सीताक नाम-
भय भीता पड़ाय जयती,
माता पिता सदृश सीता अहाँक
सब चिन्ताक नाश करती ।। १ ।।

(रोला)

(१)

सुर दुर्लभ नर देह पावि के भजु रघुनन्दन,
ओ छथि परम दयालु भक्त-हित दशरथ-नन्दन ।
भजन करू मन सँ भय जायब दुःख रहित सब,
एतदर्थ दिन-राति करै छथि अर्चन मुनि सब ।।

(२)

एक मात्र भगवान राम छथि जन-दुख-हारी,
हुनका विना न और कियो छथि जन-हितकारी।
चन्द्र सूर्य हुनके आज्ञा सँ सदा प्रकाशक,
छथि विष्टप में पूज्यमान सुखकारी पावक॥

(३)

माता पिता तथा भ्राता छथि राघव सब हक,
हुन कँहि परम कृपा सँ शिव अज हरि छथि पालक।
'अछि समस्त संसार राम में' दृढ़ करि जानू,
सूक्ष्म बीज में जना वृक्ष रहइत अछि मानू।

(४)

'राम ब्रह्म परमार्थ रूप छथि' शास्त्र कहै छथि,
हुन कँहि परम दयासँ जीव सुखी रहइत छथि।
एतदर्थ यदि सुख चाही तऽ गुरु-मुख भय के,
राम-शरण में आउ रहू नित दृढ़ व्रत लय के॥

किछु फुटकर पद्य

(भजन)

बचावय वाला छथि भगवान ।
निज शरणागत के ऊपर में,
हुनक रहै छनि ध्यान ।। १ ।। बचा० ।।

जे प्राणी चाहथि ऐ जग में,
सन्तत निज कल्याण ।
ओ सेवथि सीतावल्लभ काँ,
छोड़ि मान अपमान ।। २ ।। बचा० ।।

करुणासागर करुणा करता,
छथि ओ परम सुजान ।
दीनदयालु भक्तवत्सल छथि,
वेद करै छन्हि गान ।। ३ ।। बचा० ।।

निर्भय बनिके जपू राति-दिन,
राम नाम सुख-खान ।
सुनु अभिराम बचौता आके,
राघव दया-निधान ।। ४ ।। बचा० ।।

लेखक लिखित अन्य पुस्तक

१–श्री रामानन्द चरितम् (संस्कृत)—भाषाटीका मुद्रित। ।=)

२–श्री सीताराम स्तोत्र (संकलित)—एहि में हिन्दी, संस्कृत और बंगला भाषाक अनेक मनोहर पद्य आदि अछि (मुद्रित)। ।)

३–श्री वैद्यनाथ स्तोत्रम् (संस्कृत)—अमुद्रित।

४–श्री करुणा शतकम् (संस्कृत)—एहि में कोमल, सरल और भावपूर्ण एक सौ श्लोक अछि। अमुद्रित।

५–श्री राम पञ्चायतन स्तोत्रम् (संस्कृत)।

६–तीर्थ-यात्रा—एहि में भारतीय समस्त तीर्थ क पद्यमय वर्णन तथा गमन-क्रम अछि। (मुद्रित) हिन्दी। ।=)

७–प्रियतम प्रार्थना—ई पुस्तक तऽ पढ़ितै वने। एहि में मैथिली-भाषा क भाव-भरित-पद्य अछि। ।=)

पुस्तक-प्राप्तिस्थान

आदर्श श्रीरामानन्द महाविद्यालय

शङ्कधारा, खोजवाँ, वाराणसी ।